वेङ्कटनाथ विरचित 'हंससंदेशः' एवं रूपगोस्वामि विरचित 'हंसदूतम्' का तुलनात्मक अध्ययन

2014

संस्कृत विषय में पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित
शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

निर्देशिका,

प्रो. (श्रीमती) प्रभा शर्मा

प्रोफेसर, तुलनात्मक धर्म,

संस्कृत विभाग, डी.ई.आई. (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़ आगरा।

शोधार्थी,

धीरज कुमार द्विवेदी

अध्ययन का क्षेत्र : साहित्य

संस्कृत विभाग, कलासंकाय,

डी.ई.आई. (डीम्ड यूनिवर्सिटी),

दयालबाग़, आगरा।

शोध का उद्देश्य

काव्य मानवीय चेतना की सशक्त अर्थपूर्ण शाब्दिक अभिव्यक्ति है। भारतीय परम्परा आनन्द तत्त्व की जीवनदायिनी है। परमानन्द की प्राप्ति ही उसका लक्ष्य है। भारतीय मनीषा, साहित्य के माध्यम से इस लक्ष्य की ओर अभिमुख होती है। कवि द्वारा काव्य–प्रतिभा को अभिव्यक्त करने के साथ–साथ अपने समय की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रिय परिस्थितियों को भी विषय बनाया जाता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष भारतीय, मानवीय एवं साहित्यिक चेतना के विकास के महत्त्वपूर्ण धरातल हैं।

गीतिकाव्य, काव्य का वह स्वरूप है जिसमें काव्यत्व के साथ संगीतात्मकता प्रमुख होती है, अन्तरात्मा की ध्वनि होती है। ऋग्वेद से लेकर पुराण–साहित्य तक गीतिकाव्य का स्वरूप स्तुतिप्रधान रहा। लौकिक–साहित्य में महाकवि कालिदास द्वारा 'ऋतुसंहार' एवं 'मेघदूत' का प्रणयन कर संस्कृतसाहित्य में नवीन विधा को जन्म दिया गया। 'मेघदूत' की लोकप्रियता, मनोज्ञता और भावुकता से आकृष्ट होकर संस्कृत कवियों द्वारा दूतकाव्य की एक परम्परा ही स्थापित कर दी गई। वेङ्कटनाथकृत 'हंससंदेशः' एवं रूपगोस्वामिकृत 'हंसदूतम्' दूतकाव्य परम्परा के उत्कृष्ट निदर्शन हैं। इसीलिए भौगोलिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक जिज्ञासा एवं श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन में अभिरुचि के समय दूतकाव्य परम्परा से सम्बंधित यह दो काव्य–कृतियाँ शोधार्थी की चेतना को स्पन्दित करने लगती हैं।

आचार्य श्री वेङ्कटनाथ विरचित 'हंससंदेशः' दो आश्वासों में विभक्त है। प्रथम आश्वास में 60 श्लोक एवं द्वितीय आश्वास में 50 श्लोक हैं। विरही श्रीराम के द्वारा विरहिणी सीता के लिए हंस पक्षी के मुख से मन्दाक्रान्ता छन्द में भेजी गई आश्वासन वार्ता ही इस दूतकाव्य का वर्ण्य विषय है।

आचार्य श्री रूपगोस्वामिप्रणीत 'हंसदूतम्' 142 श्लोकों का संग्रह है। शिखरिणी छन्द में निबद्ध इस दूतकाव्य में राधाजी के विरह संताप का मार्मिक संदेश राधाजी की प्रिय सखि ललिता द्वारा हंस पक्षी के माध्यम से श्रीकृष्ण को भेजा गया है। लेखकद्वय ने हंस पक्षी को ही स्व–स्व कृतियों में संदेशवाहक बनाया है। इतिवृत्त

की कल्पना की दृष्टि से, काव्यों में भावों के संयोजन की दृष्टि से, संदेश भेजने की रीति की दृष्टि से, दूतकर्म के लिए चुने गए पात्र की दृष्टि से, काव्यों के चुने गए छन्द की दृष्टि से, दोनों काव्यकृतियों में समानता होते हुए भी पर्याप्त मौलिकता एवं असमानता विद्यमान है।

विषय चयन से पूर्व शोधार्थी द्वारा इस क्षेत्र में हुए शोधकार्यों का पर्यवेक्षण किया गया एवं विषय से सम्बन्धित पूर्वकृत शोधकार्य तालिका देखी गई। अध्येय काव्यकारों पर हुए प्रमुख शोध विषय हैं–

वेदान्तदेशिक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, लखनऊ विश्वविद्यालय, 1947, वेदान्तदेशिक के काव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1974, वेदान्तदेशिक की साहित्यिक कृतियों की समीक्षा, आगरा विश्वविद्यालय, 1978, संस्कृत में हंसकाव्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन, लखनऊ, 1990, वेदान्तदेशिक के भक्तिकाव्य, एक समीक्षात्मक अध्ययन, बैंगलौर, 1993, वेदान्तदेशिक के काव्यों में ईश्वर की अवधारणा, मद्रास विश्वविद्यालय, 2001, रूपगोस्वामि और उनका दर्शन, आगरा विश्वविद्यालय, 1966, रूपगोस्वामि का संस्कृत साहित्य को योगदान, विक्रम विश्वविद्यालय, 1969, रूपगोस्वामि और उनका नाट्यसाहित्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन, पंजाब, 1982, रूपगोस्वामि के काव्यों की दार्शनिक पृष्ठभूमि, पंजाब, 1988, मनोहारिणी कॉमेन्ट्री ऑन हंसदूतम् : ए क्रिटिकल एडीशन एण्ड स्टडी, उत्कल, 1997।

इन कृतियों का भूगोल, धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं साहित्य विषयक तुलनात्मक अध्ययन शोधार्थी की दृष्टि में अभी तक नहीं किया गया है। इसीलिए **वेङ्कटनाथ विरचित 'हंससंदेशः' एवं रूपगोस्वामि विरचित 'हंसदूतम्' का तुलनात्मक अध्ययन** नामक विषय को शोध हेतु चुना गया है।

अध्येय कृति–द्वय मात्र श्रेष्ठ दूतकाव्यात्मक रचना ही नहीं वरन् भारतीय–साहित्य, जीवन–दर्शन एवं संस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। मानवीय चेतना की उदात्तता, भावों की तन्मयता, विचारों की एकाग्रता, मार्गवर्णन की सत्यता, विषय की कल्पनाशीलता, प्रेम की प्रगाढ़ता, भक्ति की सार्थकता, भाषा की सरसता एवं संदेश की महत्ता की दृष्टि से दूतकाव्य–परम्परा के अध्ययन क्रम में 'हंससंदेशः' एवं

'हंसदूतम्' जिज्ञासु जगत् के लिए पठनीय हैं। अतः यह अध्ययन मानवीय वृत्तियों के विकास के लिए कल्याणकारी होगा।

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चिन्तन–मनन की दृष्टि से भी यह अध्ययन प्रासंगिक है।

इस अध्ययन द्वारा यह प्रयास भी किया जायेगा कि क्रमशः वैष्णव एवं गौड़ीय–सम्प्रदाय के दर्शनाचार्य, भक्ताचार्य काव्यकारों की विषयवस्तु, भाषा, भाव, धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं साहित्य विषयक मान्यताओं में पारस्परिक क्या सम्बन्ध है एवं क्या भेद है ?

शोधार्थी की समझ से आज के वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययनकाल में इस प्रकार का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक एवं लाभदायी है। अस्तु यह अध्ययन औचित्यपूर्ण है।

प्रस्तुत अध्ययन में विवेचनापूर्ण तुलनात्मक शैली को अपनाया जायेगा।

शोधार्थी को आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि विद्वद्–परिषद् इस कार्य की सफलता हेतु शुभाशीषमयी स्वीकृति प्रदान कर प्रोत्साहित करेगी।

शोधार्थी,

धीरज कुमार द्विवेदी

शोधकार्य की प्रस्तावित रूपरेखा

विषय–प्रवेश

प्रथम अध्याय : अध्येय कृतियों एवं काव्यकारों का सामान्य परिचय

- अध्येय काव्यकारों का सामान्य परिचय
- 'हंससंदेशः' एवं 'हंसदूतम्' का परिचय एवं प्रतिपाद्य
- 'हंससंदेशः' एवं 'हंसदूतम्' का दूतकाव्यत्व
- दूतकाव्य परम्परा में 'हंससंदेशः' एवं 'हंसदूतम्' का स्थान

द्वितीय अध्याय : अध्येय कृतियों का सांस्कृतिक अध्ययन

(i) अध्येय कृतियों में भौगोलिक सन्दर्भ

क, स्थलीय प्राकृतिक स्वरूप

- मार्ग वर्णन
- पर्वत
- आश्रम, उद्यान एवं वन
- प्रासाद एवं तीर्थस्थल
- जनपद, नगर एवं प्रदेश

ख, जलीय प्राकृतिक स्वरूप

- सागर
- नदी
- झरने
- सरोवर
- तट

(ii) अध्येय कृतियों में तत्कालीन समाज एवं उसके सन्दर्भ

क, अध्येय कृतियों में समाज का स्वरूप एवं सन्दर्भ

- वर्ण एवं जाति व्यवस्था
- आचार–विचार
- आहार–विहार
- लोक–विश्वास

ख, अध्येय कृतियों में ललितकलाओं का स्वरूप एवं सन्दर्भ

(iii) अध्येय कृतियों में धर्म, दर्शन एवं मनोविज्ञान और उनके सन्दर्भ

क अध्येय कृतियों में धर्म–दर्शन का स्वरूप एवं सन्दर्भ

- वैष्णव धर्मदर्शन के सिद्धान्त
- गौड़ीय वैष्णव धर्मदर्शन के सिद्धान्त
- अवतारवाद
- देवतावाद
- प्रेम व भक्ति
- लीला–विलास
- योग

ख अध्येय कृतियों में मनोविज्ञान का स्वरूप एवं सन्दर्भ

तृतीय अध्याय : **अध्येय कृतियों का साहित्यिक अध्ययन**

क, अध्येय कृतियों का भावपक्ष की दृष्टि से अध्ययन

- भावाभिव्यञ्जना
- रस–निरूपण

ख, अध्येय कृतियों का कलापक्ष की दृष्टि से अध्ययन

- भाषासौष्ठव एवं रचनाशैली
- छन्द–नियोजन
- अलङ्कार–निरूपण

चतुर्थ अध्याय : **अध्येय कृतियों का तुलनात्मक मूल्याङ्कन**

उपसंहार : **अध्ययन का निष्कर्ष एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासङ्गिकता**

विवेच्य–ग्रन्थ

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. आचार्य वेङ्कटनाथ प्रणीतः 'हंससन्देशः', चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, संस्करण : प्रथम, वि.सं. 2060, सन् 2004।
2. 'हंस–दूतम्' श्रीरूपगोस्वामि प्रभुपाद विरचितम्, प्रकाशक : कृष्णदासः (कुसुमसरोवर निवासी) मथुरा, संवत् 2014।

सहायक सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. 'काव्यप्रकाश', श्री मम्मटाचार्य, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1960।
2. 'छन्दोमंजरी', हरिदत्त शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1980।
3. 'दर्शन दिग्दर्शन', राहुल सांकृत्यायन, किताबमहल, 22–ए, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद।
4. 'दशरूपक', धनञ्जय, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ, षष्ठ संस्करण, 1986।
5. 'धर्म : स्वरूप एवं सन्दर्भ', कु. प्रभा शर्मा, महर्षि गौतम आश्रम, कासगंज, एटा, उ.प्र., 1990।
6. 'रूप–चन्द्रिका', डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, प्रकाशक : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, तृतीय संस्करण, 1997।
7. 'लघु सिद्धान्त कौमुदी', भैमी व्याख्या प्रथम भाग, प्रकाशक : भैमी प्रकाशन, 537, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली, 110006, चतुर्थ संस्करण, 2000।
8. 'वेदान्तदेशिक की साहित्यिक कृतियों की समीक्षा', सन्त कुमारी, प्रकाशक : दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग़, आगरा, 1987।

9. ‘वैष्णव धर्म एवं दर्शन’ : पं. रघुवीर सिंह शर्मा, आभा प्रकाशन, दिल्ली, 2003।

10. ‘सौन्दरनन्द का काव्य–शिल्प’, डॉ. (श्रीमती) प्रभा शर्मा, महर्षि गौतम आश्रम, प्रशासनिक कार्यालय, कासगंज, एटा, उ.प्र., प्रथम संस्करण, 2002।

11. ‘संस्कृति के चार अध्याय’, रामधारी सिंह दिनकर, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1956।

12. ‘संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास’, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, प्रकाशक : रामनारायण लाल, विजय कुमार 2, कटरा रोड, इलाहाबाद–211002, प×चम संस्करण, 1989।

13. ‘संस्कृत साहित्य का इतिहास’, बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर, वाराणसी, 1968।

14. ‘हिन्दू सभ्यता’, राधा कुमुद मुखर्जी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2007।

15. ‘हिन्दुत्व’, रामदास गौड़, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण 1933।

कोश–ग्रन्थ

1. ‘संस्कृत हिन्दी कोश’, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1966।

2. ‘हिन्दी विश्वकोश’, धीरेन्द्र वर्मा, भगवत शरण उपाध्याय, गोरख प्रसाद, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1960।

3. A SANSKRIT ENGLISH DICTIONARY, M. MONIER WILLIAMS, MOTILAL BANARASIDASS, DELHI.

❖❖❖